

महाविद्यालय के विषय में

वसन्त कन्या महाविद्यालय की स्थापना 1954 में हुई। डॉ० एनी बेसेण्ट के आदर्शों तथा शिक्षासिद्धान्तों को समर्पित महान् दार्शनिक व शिक्षाविद् डॉ० रोहित मेहता (तत्कालीन महासचिव, थिओसॉफिकल सोसाइटी) द्वारा स्थापित यह महाविद्यालय कमच्छा स्थित सोसाइटी की भारतीय शाखा के सुरम्य परिसर में विद्यमान है। "शिक्षा ही सेवा है" के मूल मंत्र से अनुप्राणित यह संस्था प्राचीन परंपराओं के साथ आधुनिक वैज्ञानिक विचारों का सन्निवेश करते हुए स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तित्व-विकास, उत्तम चरित्रनिर्माण, अनुशासनप्रियता एवं सांस्कृतिक-बोध के बीज छात्राओं में बो रही है। यह महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध होकर स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर विभिन्न विषयों में अनवरत रूप से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक सहित उच्चपरीक्षाफल, उत्तम सांस्कृतिक-कार्यक्रमों एवं विविध शिक्षणोत्तर गतिविधियों से अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। महाविद्यालय वर्तमान में कला संकाय के 9 तथा सामाजिक विज्ञान संकाय के 5 विषयों में स्नातक पाठ्यक्रम के साथ 5 विषयों में स्नातकोत्तर और शोधकार्य की सुविधा के साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत एकाधिक डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का संचालन कर रहा है।

उत्तरवाहिनी भागीरथी गंगा के पश्चिम तट पर अवस्थित भारतवर्ष की सुप्राचीन, सांस्कृतिक एवं वैचारिक अभ्युत्थान की केन्द्र काशी नगरी सदा से ही वैदिक, अनेक दार्शनिक मत-मतान्तरों तथा साहित्य और संगीत की साधनास्थली के रूप में विख्यात रही है। हमारी आद्यप्रेरणा डॉ० एनीबेसेण्ट और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना मदन मोहन मालवीय शिक्षा के क्षेत्र में, विशेषतः नारीशिक्षा के लिये संगीत के अध्ययन-अध्यापन को बहुत महत्त्व देते थे। फलतः इस महाविद्यालय में भी प्रारम्भ से ही संगीत शिक्षा की व्यवस्था रही। उच्चस्तरीय शिक्षण-प्रशिक्षण और मंच-प्रदर्शन की परम्परा को निभाने के साथ गंभीर विचार-विमर्श के लिए अनेक राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन होता रहा है।

पंजीकरण निःशुल्क

प्रतिभागिता का ई-प्रमाणपत्र दिया जायेगा।

पंजीकरण के लिये कृपया नीचे लिखे लिंक पर क्लिक करें

<https://bit.ly/2yAMf6I>

कैसे जुड़ें : मीटिंग आईडी / लिंक (गूगल मीट द्वारा)

आईडी : ktr-qwqa-ucg

लिंक : <http://meet.google.com/ktr-qwqa-ucg>

(गूगल मीट एप डाउनलोड करें, प्लेस्टोर के माध्यम से या एप्पल स्टोर अथवा लैपटॉप / डेस्कटॉप द्वारा इस लिंक के माध्यम से आसानी से जुड़ सकते हैं)

यू-ट्यूब लिंक : <https://bit.ly/3gaJ9GY>

फेसबुक लिंक : <https://bit.ly/2ymYB1P>

द्वि-दिवसीय वेबीनार

दिनांक : 4-5 जून, 2020

वर्तमान परिदृश्य में संगीत : शैलीगत विविधता, सौन्दर्य, मनोविज्ञान व तकनीक

EDUCATION



AS SERVICE

आयोजक

संगीत (गायन) विभाग

वसन्त कन्या महाविद्यालय

(एडमिटेड टू द प्रिविलेजेस ऑफ बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी)

कमच्छा, वाराणसी

"नैक" द्वारा 'A' प्रमाणित

दूरभाष — 0542-2455382,

ई.मेल — vkmdegree.college@gmail.com

वेबसाइट — www.vkm.org.in

संरक्षक : श्रीमती उमा भट्टाचार्या

प्रबन्धक

मार्गदर्शक : प्रो. रचना श्रीवास्तव

प्राचार्या

संयोजक : डॉ० स्वरवन्दना शर्मा

अध्यक्षा,संगीत (गायन)

सह-संयोजक : डॉ० सीमा वर्मा

असो. प्रो,संगीत (गायन)

आयोजन समिति :

डॉ० नीहारिका लाल

असो. प्रो., अंग्रेजी

डॉ० इन्दु उपाध्याय

असो. प्रो., अर्थशास्त्र

डॉ० शुभ्रा सिन्हा

असि. प्रो., मनोविज्ञान

डॉ० अनुराधा बापुली

असि. प्रो., समाजशास्त्र

श्री सौम्यकान्ति मुखर्जी

तबलासंगतकार,संगीत(गायन)

तकनीकी सहायक :

श्रीमती भारती चट्टोपाध्याय

सीनियर असिस्टेंट

श्री चन्द्र कान्त चटर्जी

टेक्निकल असिस्टेंट

श्रीमती वर्षा यादव

जूनियर असिस्टेंट

श्री विशाल प्रजापति

जूनियर असिस्टेंट

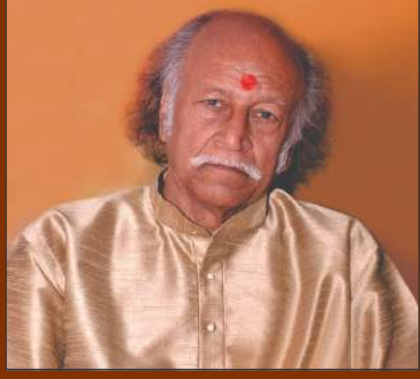
वेबीनार के बारे में

संगीत के मूल उत्स नाद को विज्ञान की दृष्टि से सत्, मनोविज्ञान की दृष्टि से चित् और सौन्दर्यात्मक दृष्टि से आनन्द कहा जा सकता है। ऐसा सच्चिदानन्द रूपी संगीत एक होते हुए भी अनेक रूप ले लेता है शैलीगत विविधताओं के माध्यम से। मन उसकी परत दर परत खोलते हुए भावजगत की अनन्त यात्रा करा देता है।

वर्तमान परिदृश्य में संगीत जैसा आनन्दानुभूति प्रधान विषय आज समसामयिक सामाजिक सन्दर्भों में उपयोगिता की दृष्टि से भी विश्लेषित हो रहा है। डिजिटल होती जा रही दुनियाँ में तकनीक का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। अन्यान्य विषयों की भाँति संगीत-शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रदर्शन, तत्संबंधी विचार-मंथन और सृजन भी संचार-माध्यमों से आकार और गति प्राप्त कर रहे हैं। इन यांत्रिक माध्यमों के अपने सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष होने पर भी हम उनकी सुविधाओं पर आश्रित हैं।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, अतः सकारात्मक संभावनाएँ ढूँढना आवश्यक है। चारों ओर व्याप्त कोविड-19 के संताप से तप्त जनसमुदाय को ठंडी बयार की राहत देने के लिये, उसके कोलाहल से त्रस्त जनमानस को शांतिदायक मधुरता का स्पर्श देने के लिये विश्वभर में संगीतकार अपने-अपने प्रयत्नों को साकार कर रहे हैं। ऐसी ही सकारात्मकता और प्रयोगधर्मिता की श्रृंखला में एक कड़ी जोड़ते हुए संगीत की शैलीगत विविधता को समझने के लिये, उसके सौन्दर्य और मनोविज्ञान से परिचित होने के लिये, उसकी तकनीकी बारीकियों पर विचार-विनिमय करने के लिये तथा प्रयोग-प्रदर्शन की आन्तरिक आनन्दानुभूति को पाने के लिये यह द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार संकल्पित है।

अतिथि वक्ता एवं प्रस्तोता



पद्मश्री प्रो० राजेश्वर आचार्य
पूर्व उपाध्यक्ष, उ.प्र.,संगीत नाटक अकादमी,
पूर्व अध्यक्ष संगीत विभाग,
दी.द.उ. गोरखपुर वि.वि.

श्री चिन्तन उपाध्याय
ध्रुपद गायक, डागर परम्परा,
मुम्बई



डॉ० मधुरानी शुक्ला
सेक्रेट्री, व्यंजना आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी
सम्पादक, अनहद लोक, प्रयागराज

प्रो० के. शशिकुमार
पूर्व विभागाध्यक्ष, गायन विभाग,
संगीत एवं मंचकला संकाय,
का.हि.वि.वि.



दिनांक : 4 जून, 2020

उद्घाटन सत्र : 12:00 – 12:45 अपराह्न

अध्यक्ष – प्रो० राजेश्वर आचार्य

प्रथम सत्र 12:45 – 1:15 अपराह्न

श्री चिन्तन उपाध्याय

द्वितीय सत्र 1:15 – 2:00 अपराह्न

डॉ० मधुरानी शुक्ला

सप्रयोग सायंकालीन सत्र 5:30 – 6:30 सायं

प्रो० के. शशिकुमार

एवं

डॉ० रामशंकर

दिनांक : 5 जून, 2020

सत्रारम्भ : 12:00 मध्याह्न

तृतीय सत्र 12:15 – 1:00 अपराह्न

प्रो० श्रुति सडोलिकर काटकर

चतुर्थ सत्र 1:00 – 1:45 अपराह्न

श्री प्रेमकुमार सिवपेरुमन

समापन सत्र 1:45 – 2:00 अपराह्न

सप्रयोग सायंकालीन सत्र 5:30 – 6:30 सायं

डॉ० विधि नागर

अतिथि वक्ता एवं प्रस्तोता



प्रो० श्रुति सडोलिकर काटकर
कुलपति, भातखंडे संगीत संस्थान,
अभिमत विश्वविद्यालय, लखनऊ



श्री प्रेमकुमार सिवपेरुमन
विभागाध्यक्ष, ऑडियो इंजीनियरिंग विभाग,
पद्मभूषण डॉ० ए. आर. रहमान,
के एम एम सी, चेन्नई

डॉ० रामशंकर

असि. प्रोफेसर, गायन विभाग,
संगीत एवं मंचकला संकाय,
का.हि.वि.वि.



डॉ० विधि नागर
पूर्व विभागाध्यक्षा, नृत्य विभाग,
संगीत एवं मंचकला संकाय,
का.हि.वि.वि.